समकालीन हिन्दी कविता : संवेदना और शिल्प की कसौटी पर

डॉ. आर.पी. वर्मा,
असि. प्रो. एवं अध्यक्ष हिन्दी विभाग,
इन्दिरा गॉंधी राजकीय महिलामहाविधालय,
रायबरेली, उ.प्र.

नई कविता के विविध आंदोलनों में एक महत्वपूर्ण काव्य आंदोलन समकालीन कविता है। कवि धूमिल ने इसमें स्वतन्त्रता, तनाव एवं यथार्थपरक स्थितियां होना स्वीकार किया है। डॉ. उपाध्याय समकालीन कविता को अपने समय के मुख्य द्वन्द्वों एवं अन्तर्विरोध की कविता मानते हैं।

समकालीन कविता में जो हो रहा है बीकमिंग का सीधा खुलासा है। इसे पढ़कर वर्तमानकाल का बोध हो सकता है। क्योंकि उसमें जीते, संघर्ष करते, लड़ते, बौखलाते, तड़पते, गरजते तथा ठोकर खाकर सोचते वास्तविक आदमी का चित्रण है। यह काल क्षण की कविता नहीं काल प्रवाह की आघात और विस्फोट की कविता है। इसीलिए समकालीन लम्बी कविताओं की बुनावट तरंगों की तरह है। समकालीन कवि इसकी चिन्ता नहीं करता कि अमुक कथन कितना अश्लील है। अथवा विद्रूप है, वह तो यथार्थ और सपाट कहने का पक्षधर है। वह जिन्दगी की विसंगतियों को कुंठाओं, अन्तर्व्यथथाओं को उसी रूप में सीधे से कहने में विश्वास रखता है।

समकालीन कविता राजनैतिक चेतना को यथार्थ रूप में स्वीकार किय हैं। यही कारण है कि धूमिल की अधिकांश कविताएं राजनीति से सम्बन्धित है। ए.एम. मुरलीधरन तक समकालीन कविता को 'राजनीतिक कविता' कहकर पुकारने में कोई बुराई देखते। दरअसल आज राजनीति व्यक्ति के निजी सम्बन्धों तक पर अपना विषाक्त प्रभाव डाल चुकी है। भले ही कुछ कवियों और आलोचकों को कविता में राजनीति का यथार्थ वर्णन काव्य की क्षति लगता हो, कविता अभिधात्मक लगती हो, लेकिन सच्चाई यह है कि इससे बचकर चल पाना असंभव है। भ्रष्टाचार, अन्याया, शोषण, अपराधीकरण राजनीति के एक से एक घिनौने चेहरे हैं। जिनको हिन्दी के सत्तरोत्तर कवियों ने पूरी ईमानदारी से उतारा है। 'मदन डागा' इस यथार्थ को इस प्रकार उतारते हैं।

पहले लोग
सठिया जाते थे
अब कुर्सिया जाते हैं
दोस्त मेरे
भारत एक कृषि प्रधान देश नहीं
एक कुर्सी प्रधान देश है।

हिन्दी के प्रायः सभी कवियों ने अपनी–अपनी शैली में राजनीति की वास्तविकता को उद्घाटित किया है। धूमिल का विशिष्ट लहजा इस संदर्भ में स्मरणीय है। उनकी कविताओं में राजनीति की सच्चाई बड़े तीखेपन से उद्घाटित हुई है। राजनीति ने लोकतन्त्र की जड़ों को खोखला कर दिया है। राज्यसत्ता का अर्थ अब जनता का शोषण भर है–

राज्यसत्ता
अस्सी प्रतिशत लोगों की आँख में
बूट और बारूद की सत्ता है
पांच प्रतिशत लोगों के हाथ में

मनमाना राज्य

और बाकी हम जैसों के दिमाग में

राज्य सत्ता।

इस युग के कवि को इस सच्चाई का भी भलीभांति पता है कि कोरे नारों, क्रांति का गीत गाने से कुछ होने वाला नहीं है। अपनी क्षमता भर संघर्ष ही उसका सार्थक हो सकता है। कुमार विकल इसको यूं व्यक्त करते हैं –

मुझे लड़ना नहीं

किसी प्रतीक के लिए

किसी नाम के लिए

किसी बड़े प्रोग्राम के लिए

मुझे लड़नी है एक छोटी सी

लड़ाई

छोटे लोगों के लिए

छोटी बातों के लिए

समकालीन कविता को कुछ विशेषताओं के आधार पर कुछ भागों में विभाजित कर सकते हैं। समकालीन कविता का कथ्य यथार्थ एवं वक्तव्यों पर आधारित है। इसमें राजनीतिक–सामाजिक व्यवस्था के प्रति विशेष दृष्टि है। सपाटबयानी इस कविता की धरोहर है। शब्द प्रयोग के संदर्भ एवं प्रसंगगत अर्थव्यापकता निहित है। परम्परा के प्रति विरोध, असहमति का भाव। प्रतिबद्धता के धरातल पर स्थित तथा निज, समाज तथा देश व्यवस्था के प्रति जागरूकता।

सर्वप्रथम मुक्तिबोध ने अभिव्यक्ति के खतरों को उठाकर समकालीन कविता का मार्ग प्रशस्त किया। उनकी वैचारिक चेतना और विद्रोहात्मक चिन्तन को जिन कवियों ने गम्भीरता, गहनता एवं योजनाबद्ध तरीकों से अग्रसर किया है उसमें धूमिल, जगूड़ी, चन्द्रकान्त देवताले, केदारनाथ सिंह, राजेश जोशी, ज्ञानेन्द्रपति, कुमारेन्द्र, पारसनाथ सिंह, कुमार विकल, सौमित्र मोहन, मंगलेश डबराल आदि विशेष उल्लेख है।

धूमिल की अकाल दर्शन, मोचीराम और पटकथा, जगूड़ी की पेड़ की आज़ादी, एक शब्द तिनका और इस व्यवस्था में। कुमार विकल की वापसी, चन्द्रप्रकाश देवताले की प्रजातन्त्र का बुखार, सौमित्र मोहन की प्रजातन्त्र आदि रचनाएं समकालीन परिदृश्य में परिवर्तनकामी उद्घोष है।

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना की प्रसिद्ध पंक्तियां –

आप विश्वास करें

मैं कविता नहीं कर रहा

सिर्फ आग की ओर इशारा कर रहा हूँ

जमीन पक रही है, रोटी,

भेड़िया गुर्राता है तुम मशाल जलाओ।

इन्होंने अपनी कविता की शुरुआत आग से खेलते हुए और पसीने से तरबतर इंसान से की है। निराला की भिक्षुक, वह तोड़ती पत्थर जैसी रचनाओं से आम जिंदगी को संस्पर्श करती जिस नवीन काव्य परम्परा का श्री गणेश हुआ था। समकालीन कवियों ने उसी का निर्वाह भुट्टा सेंकने वाली, शरीर बेचने के लिए विवश नारी तथा निर्वासित, निर्वासन, भूखे लोगों के अभावग्रस्त जीवन के अंकन द्वारा किया है।

सब कुछ बन रहा है मेरे देश में

नवभवन–सड़कें–योजनाएं लेकिन

निर्माण की इस दौड़ में नहीं बन पाया

अब तक/एक अदद आदमी

समकालीन कविता का केन्द्रीय चरित्र आम आदमी है। धूमिल, जगूड़ी, ज्ञानेन्द्रपति सरीखे कवियों ने शोषण चक्र में पिसते, जिम्मेवारियों के बोझ को ढोते, सामाजिक औपचारिकताओं को निभाते और पेटपूर्ति की तलाश में टूटते, खपते हुए आम

आदमी ने दुःख–दर्द, पीड़ा और छटपटाहट को संस्पर्श किया है।

जब भी भूख से लड़ने कोई खड़ा हो जाता है
सुन्दर दीखने लगता है।

–सर्वेश्वर दयाल सक्सेना

इसी तरह केदारनाथ सिंह ने कविता को उस आग का प्रतीक घोषित किया है जो शोषितों, पीड़ितों और दलितों में ज्वलित होने को है।

कभी देखा है
काली स्याह धरती का
एक दम हरा होता हुआ चेहरा ?

–श्री लीलाधर जगूड़ी

इसी तरह 'मोचीराम' की पंक्तियां –

इन्कार से भरी हुई चीख
और एक समझदार चुप
दोनों का मतलब एक है।

(धूमिल)

मेरे वक्तव्य
बेवकुफ की तरह
मुझ पर हंस रहे हैं।

(चन्द्रकान्त देवताले)

मैं अब भी चल रहा हूँ
इस आशा में कि मुझे अपनी राह
कहीं तो मिलेगी ही
नहीं भी
मिले तो क्या मैं चल तो रहा हूँ।

(गोविन्द माथुर) शेष होते हुए 'चौथा सप्तक' की भूमिका में अज्ञेय को भी शिकायत है कि यहां संकलित कविताएं बोलती अधिक और कहती कम हैं। समकालीन कविता की एक दूसरी मुद्रा है व्यंग्य की। मिथकीय परम्परा ने स्वप्न या फैन्टेसी रूप में भी समकालीन कवियों को प्रभावित किया है। कुमारेन्द्रपाल सिंह, धूमिल, श्रीराम तिवारी, विजेन्द्र, वेणुगोपाल, कुमार विकल, लीलाधर जगूड़ी आदि कवियों ने स्वप्न/फैंटेसी के सशक्त प्रयोग किए हैं –

सामने से एक लड़की आई
और पास आते–आते/और हो गई
... फिर वही औरत आई
बच्चों को खदेड़ कर ले गई
जैसे उसी के हों।

राजेश जोशी ने रोती–कराहती, शोषण की चक्की में पिसती आम जनता को पेड़ के माध्यम से नए चिन्तन का स्वातन्त्रय बोध का, सत्तात्मक संघर्ष का संदेश दिया है–

पेड़ की तरह सोचता हूँ
पेड़ भर
ऊंचा उठकर
पेड़ भर सोचता हूँ
इसी से जंगल नाराज़ है।

प्रत्येक पंक्ति अपने आप में एक अलग इकाई है। सबका अपना एक स्वतन्त्र अर्थ है। सभी कवि अपनी बात तीव्र और सटीक तरीके से कहते हैं। यह कविता वास्तविक जीवन की समस्याओं को उद्घाटित करने में सफल भूमिका निभा रही है।

संदर्भ

- गजानन माधव मुक्तिबोध

- संसद से सड़क तक, धूमिल, पटकथा, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
- दूसरे प्रजातन्त्र की तलाश में धूमिल, कृष्ण कुमार, प्रकाशक, साहित्य निधि, दिल्ली
- साठोत्तरी हिन्दी कविता में क्रांति और सृजन, डॉ. मीरा गौतम, निर्मल पब्लिकेशन, शाहदरा, दिल्ली।
- सत्तरोत्तरी प्रगतिशील कविता, डॉ. राजेन्द्र टोकी।
- समकालीनता के अर्थों में हिन्दी कविता– संपादक प्रो. (डॉ.) सुखदेव सिंह मिन्हास पृ. 64
- समकालीन हिन्दी कविता संवेदना और शिल्प की कसौटी पर– डॉ. मनीषा प्रिवंवदा, पृ. 160 से 64 तक

Copyright © 2014, Dr. R.P.Verma. This is an open access refereed article distributed under the creative common attribution license which permits unrestricted use, distribution and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.